चित्रपट संगीत में रस का महत्त्व

डॉ. स्वाति शर्मा
सहायक प्राध्यापिका संगीत (गायन)
के.वी.ए.डी.ए. कॉलेज, करनाल

ईश्वर की ओर से मानव को मिलने वाला सर्वश्रेष्ठ उपहार है ''संगीत'' हमारी संस्कृति है, हमारी विरासत है। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक विवाह, पर्व एवं त्यौहार इत्यादि प्रत्येक कार्य में संगीत अह्म भूमिका निभाता है।

संगीत भाव का विज्ञान है। संगीत की प्रत्येक विधा गायन, वादन तथा नृत्य का मुख्य उद्देश्य भावाभिव्यक्ति है। कलाकार चाहे कोई भी हो अपने वाद्य यन्त्र के माध्यम से अपने मनोभावों का ख्याल को साकार रूप प्रदान करने की कोशिश करता है। संगीत का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन है। चाहे शास्त्रीय संगीत हो, चाहे लोक संगीत हो चाहे चित्रपट संगीत सबका उद्देश्य श्रोताओं के चित्त का रंजन करना होता है। प्रत्येक कलाकार को रस भाव के बारे में विस्तृत जानकारी का होना अति आवश्यक है।

रस : रस काव्यशास्त्र का प्रमुख अंग है। रस शब्द का प्रयोग हम ऋगवेद से ही मिलता है।–''रस ने समंगस्महि महवों रसों सुगमरित ऋषिभिः संभृत रसम्''–कहकर रस का संकेत ऋगवेद में किया गया है। रस की महत्ता ईसा की दूसरी–तीसरी शताब्दी में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। साहित्य के क्षेत्र में विधिवत् लक्षणबद्ध करने का कार्य सम्पन्न किया नाट्यकला के परमाचार्य भरत मुनि ने किया। भरत मुनि ने रस सूत्र का प्रतिपादन नाटक प्रसंग में किया, जो धीरे–धीरे अन्य आचार्यों के हाथों में आते–आते आज दार्शनिक रूप में हमारे समदा सुमपस्थित है। नाट्यशास्त्र में आचार्य भरत ने हा है, ''दृश्यते कि भावेभ्ययो रसानामभिनिर्वृतिर्न तु रसेम्यो भवाना–मभिनिवृरिति। अर्थात् अनेक प्रकार के अभिनयों से संबंध रसों को भक्ति करने वाले भावों से रस की उत्पति होती है। रस सिद्धांत का आरंभ सामाजिक संबंध में हुआ था किन्तु उसका विकास दार्शनिक धरातल पर हुआ। भरत मुनि ने लोक व्यापार को ध्यान में रखकर ही रस निर्वाह पर बल दिया था।

रस एक अनुभूति दशा है जिसका संबंध सीधा सामाजिक से होना चाहिए

क्योंकि मूल मात्र तो लौकिक दशा की सुख–दुखात्मकता का ही अनुभव करते हैं। संगीत के माध्यम द्वारा आम लोगों को रस का अनुभव कराने के लिए चित्रपट संगीत का सहारा लिया गया। ताकि मनुष्य सुख, दुख, खुशी गम आदि का अनुभव कर सके।

चित्रपट संगीत

भारत में आमतौर पर लोग संगीत, सुगम संगीत और शास्त्रीय संगीत तीनों संगीत विशेष तौर पर दिखाई पड़ते हैं तथा तीनों की अपने–अपनी महत्वपूर्ण प्रसिद्धि है। इन तीनों द्वारा संगीत के क्षेत्र में एक नई वैशिष्टपूर्ण धारा प्रवाहित होती रही है। जिसे चित्रपट संगीत मनोरंजन का सर्वाधिक सुलभ साधन के रूप में हमारे सम्मुख आया है।

भारत में चित्रपटों के आगमन से चित्रपटों में कथा–वस्तु के अनुकूल वातावारण, सामग्री तथा निर्मित कलाओं की लोकप्रियता इत्यादि को ध्यान मे रखते हुए समाज के लिए चित्रपटों का निर्माण किया गया जिसमें सामाजिक जीवन की प्रत्येक घटना परिस्थिति का अनुमान चित्रपटकर्त्ता को होना आवश्यक है। भारतीय चित्रपट निर्माताओ ने इन सभी बातों का विशेष ध्यान रखा। चित्रपटों में ऐसा संगीत दिया। जिसने मानव मन पर अपनी गहरी छाप लगा दी।

किसी भी क्षेत्र में कोई भी शैली उद्‌भावित होती है तो उसका उद्‌भव अचानक नहीं होता, वह अपनी परम्पराओं में ही कुछ नई कल्पनाओं के मिलने से उत्पन्न होती है चित्रपट के चित्रपटों में ऐसा अनूठा एवं चमत्कारी संगीत का स्वरूप है जो कि किसी भी रस को उत्पन्न करने में संक्षम है। साधारण शब्दों में चित्रपट में जिस संगीत का प्रयोग किया जाता है उसे चित्रपट संगीत कहा जाता है। संगीत के बिना चित्रपट ही अधूरा लगे ऐसा संगीत, चित्रपट के साथ जोड़ दिया गया। चित्रपट संगीत बहुत प्रचारित–प्रसारित हुआ और धीरे–धीरे मानव मन और हृदय में इसने अपना स्थान बना लिया।

चित्रपट : संगीत का महत्त्व एवं लाकेप्रियता :

चित्रपट संगीत का मूल उद्देश्य यह होता है कि श्रोताओं को सुनने में मधुर व शीघ्र प्रभाव डालने वाला हो। चित्रपट संगीत के विशेष नियम नहीं होते। इसमें संगीतकार अपनी कल्पना के अनुसार संगीत का सृजन करता है। चित्रपट संगीत लय प्रधान होता है। स्वर सौन्दर्य उच्च स्तर के लोगों के बोधगम्य होता है इसलिए लय का क्षणिक व स्वर का प्रभाव स्थायी होता है। चित्रपट संगीत में कोई बन्धन नहीं होता और रंजकता, मधुरता एवं भावात्मक सौन्दर्य की सृष्टि एक मात्र उद्देश्य होता है। चित्रपट संगीत में गाना गाने के लिए मधुर कंठ, संगीत निर्देशन के लिए योग्य निर्देशक आदि का महत्वपूर्ण

स्थान है।

चित्रपट संगीत ही है जिसने संगीत की प्रत्येक शैली को जन साधारण तक पहुंचाया है। चित्रपट संगीत ने अपना मोह माया जाल फैलाकर अपनी रसमयी अनुभूति द्वारा भारतीय श्रोताओं के साथ–साथ विदेशियों को भी अपने रेशम से बन्धन में बांध लिया है।

आज के परिप्रेक्ष्य में चित्रपट संगीत के क्षेत्र में अपूर्व उन्नति हुई। पार्श्व गायन के विकास के साथ–साथ गाने के स्तर और शैली में भी गीत के प्रत्येक भाव की बड़ी सूक्ष्मता और सुन्दरता से दर्शाने के प्रयास जारी है।

सन्दर्भ

1. भारतीय चित्रपट का इतिहास, महेन्द्र मित्तल
2. फिल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनके समकालीन संगीतकार, सीमा जौहरी।